काक भुशुण्डि रामायण

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

श्री रामचन्द्राय नमः

श्री काकभुशुण्डि रामायण

(सरल हिन्दी अनुवाद सहित)

कलियुग के समस्त ताप-संताप को दूर करके भवसागर से पार उतारने वाली काक भुशुण्डि के श्री मुख से वर्णित संक्षिप्त राम कथा

मूल्य : ३-००

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन)
हरिद्वार 249401

प्रकाशक :
रणधीर बुक सेल्स, (प्रकाशन)
रेलवे रोड, आरती होटल के पीछे,
हरिद्वार 249401
फोन : (01334) 6297

मुद्रक : **राजा आफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली-92**

मूल्य : 3 रुपये मात्र

निवेदन :
प्रचार के लिए बांटने वाले सज्जन
प्रकाशक से सम्पर्क करें उन्हें
पुस्तकें लागत मात्र पर
दी जायेंगीं।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

काकभुशुण्डि रामायण

[रामचरित मानस उत्तरकाण्ड दोहा ६३ (क) से ६८ (क)]

दोहा

नाथ कृतारथ भयउँ मैं,
तव दरसन खगराज।
आयसु देहु सो करौं अब,
प्रभु आयहु केहि काज। ६३ क।

हे पक्षीराज! आपके दर्शन से मैं कृतार्थ हुआ। अब आप जो आज्ञा दें वही मैं करूं। हे प्रभो! आप किस कार्य के निमित्त आये हैं।

सदा कृतारथ रूप तुम्ह,
कह मृदु बचन खगेस।
जेहि कै अस्तुति सादर,
निज मुख कीन्हि महेस। ६३ ख।

गरुड़जी कोमल वाणी से बोले- आप तो सदैव ही कृतार्थ रूप हैं, शिवजी ने आदर समेत अपने श्रीमुख से जिनकी बड़ाई की है।

सुनहु तात जेहि कारन आयउँ,
सो सब भयउ दरस तव पायउँ।
देखि परम पावन तव आश्रम,
गयउ मोह संसय नाना भ्रम।

हे तात! सुनिए, जिस कारण से मैं

आया हूं, वह सब काम आपके दर्शन पाते ही पूरा हो गया। आपके इस अत्यन्त पवित्र आश्रम को देखकर मोह, संशय और अनेकों भ्रम जाते रहे।

अब श्रीराम कथा अति पावनि,
सदा सुखद दुख पुंज नसावनि।
सादर तात सुनावहु मोही,
बार बार बिनवउँ प्रभु तोही।

अब श्रीरामजी की अत्यन्त पवित्र सुख देने वाली और दुःख के समूहों को नाश करने वाली कथा, हे तात! मुझे आदर सहित सुनाइये। हे प्रभो! मैं आपसे बार-बार यही विनती करता हूं।

सुनत गरुड़ कै गिरा बिनीता,
सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता।
भयउ तासु मन परम उछाहा,
लाग कहै रघुपति गुन गाहा।

गरुड़जी की विनम्र, सीधी, प्रेम भरी, सुखदायिनी और अत्यन्त पवित्र वाणी सुनते ही कागभुशण्डिजी के मन में परम उत्साह हुआ और वे रामचन्द्रजी के गुणों की कथा कहने लगे।

प्रथमहिं अति अनुराग भवानी,
रामचरित सर कहेसि बखानी।
पुनि नारद कर मोह अपारा,
कहेसि बहुरि रावन अवतारा।

प्रभु अवतार कथा पुनि गाई,
तब सिसु चरित कहेसि मन लाई।

हे भवानी! उन्होंने पहले तो बड़े प्रेम से रामचरितमानस का रूपक कहा। फ़िर नारदजी का अपार मोह और फिर रावण का अवतार कहा। फिर प्रभु के अवतार की कथा कही। तदनन्तर मन लगाकर रामजी के बाल चरित्र कहे।

दोहा

बालचरित कहि बिबिधि बिधि,
मन महँ परम उछाह।
रिषि आगवन कहेसि पुनि,
श्री रघुबीर बिबाह। ६४।

अनेक प्रकार के बाल चरित्र कहकर मन

में बहुत आनन्द हुआ। फिर विश्वामित्रजी का आगमन कहकर श्रीरामजी का विवाह वर्णन किया।

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा,
पुनि नृप बचन राज रस भंगा।
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा,
कहेसि राम लछिमन संबादा।

तदनन्तर रामजी के राजतिलक का हाल, फिर राजा दशरथजी के वचनों से राजतिलक का न होना, नगरवासियों का विरह दुःख तथा श्रीराम-लक्ष्मण का सम्वाद सुनाया।

बिपिन गवन केवट अनुरागा,
सुरसरि उतरि निवास प्रयागा।

बालमीक प्रभु मिलन बखाना,
चित्रकूट जिमि बसे भगवाना।

श्रीरामजी का वनगमन, केवट की प्रीति, गंगाजी से पार उतरकर प्रयाग में निवास, वाल्मीकिजी से प्रभु का मिलाप और जैसे भगवान चित्रकूट में बसे, वह सब कहा।

सचिवागवन नगर नृप मरना,
भरतागवन प्रेम बहु बरना।
करि नृप क्रिया संग पुरबासी,
भरत गए जहँ प्रभु सुख रासी।

मंत्री का पुरी में लौटना, राजा का मरण, भरतजी का लौटना और उनका अत्यन्त स्नेह वर्णन किया। फिर राजा की क्रिया

करके नगरवासियों के साथ भरतजी जहां सुखनिधान प्रभु थे वहां गए।

पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाए,
लै पादुका अवधुपर आए।
भरत रहनि सुरपति सुत करनी,
प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी।

फिर रामजी ने उनको बहुत भांति से समझाया, जिससे वे खड़ाऊं लेकर अयोध्यापुरी लौट आए। फिर भरतजी के निवास की विधि, इन्द्र पुत्र जयन्त की नीच करनी और फिर प्रभु व अत्रिजी की भेंट।

दोहा

कहि बिराध बध जेहि बिधि,
देह तजी सरभंग।

बरनि सुतीछन प्रीति पुनि,
प्रभु अगस्ति सतसंग। ६५।

विराट का वध और जैसे शरभंग ने देह छोड़ी सो कथा कही। फिर सुतीक्ष्ण का प्रेम तथा प्रभु अगस्त्यजी का सत्संग वर्णन किया।

कहि दंडक बन पावनताई,
गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई।
पुनि प्रभु पंचबटीं कृत बासा,
भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा।

दण्डकवन का पवित्र करना कहकर गीधराज की मित्रता कही। फिर प्रभु ने पंचवटी में वास किया और सब मुनियों के भय को दूर किया।

पुनि लछिमन उपदेस अनूपा,
सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा।
खर दूषन बध बहुरि बखाना,
जिमि सब मरमु दसानन जाना।

फिर जैसे लक्ष्मणजी को अनुपम उपदेश दिया और सूर्पणखाँ को कुरूप किया वह सब कहा। फ़िर खरदूषण का वध और जिस प्रकार रावण ने समाचार जाना, वह सब बखान कर कहा।

दसकंधर मारीच बतकही,
जेहि बिधि भई सो सब तेहिं कही।
पुनि माया सीता कर हरना,
श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना।

फिर जिस प्रकार रावण व मारीच में बातचीत हुई सो उन्होंने कही। तदनन्तर माया की सीता का हरण और रामजी के विरह को कुछ कहा।

पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्ही,
बधि कबंध सबरिहि गति दीन्ही।
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा,
जेहि बिधि गए सरोबर तीरा।

फिर जैसे जटायु की क्रिया प्रभु ने की और कबन्ध का वध करके शबरी को गति दी और श्रीरामजी विरह का दुःख वर्णन करते हुए जिस भांति से पंपा सरोवर के किनारे गए, सो सब कहा।

दोहा

प्रभु नारद संबाद कहि,
मारूति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई,
बालि प्रान कर भंग। ६६ क।

प्रभु और नारदजी का सम्वाद कहकर हनुमानजी से मिलने का प्रसंग कहा। फिर सुग्रीव की मित्रता कहकर बालि का मरण कह सुनाया।

कपिहि तिलक करि प्रभु कृत,
सैल प्रबरषन बास।
बरनन बर्षा सरद अरू,
राम रोष कपि त्रास। ६६ ख।

सुग्रीव को राजतिलक करके प्रभु ने प्रवर्षण पर्वत पर वास किया, वह और वर्षा व शरद ऋतु का वर्णन, श्रीरामजी का क्रोध और सुग्रीव आदि का भय प्रसंग कहे।

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए,
सीता खोज सकल दिसि धाए।
बिबर प्रवेस कीन्हि जेहि भाँती,
कपिन्ह बहोरि मिला संपाती।

फिर जिस प्रकार सुग्रीव ने सब वानरों को भेजा, वे सीताजी की खोज में सब ओर गये, जिस भांति वानरों ने गुफा में प्रवेश किया और फिर जैसे उन्हें संपाती मिला, वह सब कथा कही।

सुनि सब कथा समीरकुमारा,
नाघत भयउ पयोधि अपारा।
लंकाँ कपि प्रबेस जिमि कीन्हा,
पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा।

संपाती से सब कथा सुनकर हनुमानजी अपार समुद्र को लांघ गये और लंका में हनुमानजी ने जिस भांति प्रवेश किया, फिर जैसे सीताजी को धैर्य दिया, सो सब कहा।

बन उजारि रावनहि प्रबोधी,
पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी।
आए कपि सब जहँ रघुराई,
बैदेही की कुसल सुनाई।

फिर अशोकवाटिका को उजाड़कर,

रावण को समझाकर, लंका दहन करके फिर समुद्र को लांघ कर आना कहा। फिर सब वहां आए जहां रामचन्द्रजी थे, उन्हें सीताजी के कुशल समाचार सुनाये।

सेन समेति जथा रघुबीरा,
उतरे जाइ बारिनिधि तीरा।
मिला बिभीषन जेहि बिधि आई,
सागर निग्रह कथा सुनाई।

फिर जिस प्रकार रामजी सेना समेत समुद्र के किनारे उतरे, जिस भांति विभीषण आकर मिले, वह और समुद्र के बांधने की कथा सुनाई।

दोहा

सेतु बाँधि कपि सेन जिमि,
उतरी सागर पार।
गयउ बसीठी बीरबर,
जेहि बिधि बालिकुमार। ६७ क।

पुल बांधकर जिस प्रकार सेना पार उतरी और जिस तरह बालि पुत्र वीर श्रेष्ठ अंगद, दूत बनकर लंका में गए, वह कहा।

निसिचर कीस लराई,
बरनिसि बिबिध प्रकार।
कुंभकरन घननाद कर,
बल पौरुष संघार। ६७ ख।

राक्षस और वानरों की लड़ाई विविध भांति से वर्णन की। फिर कुम्भकर्ण और मेघनाद का बल पराक्रम और संहार वर्णन किया।

निसिचर निकर मरन बिधि नाना,
रघुपति रावन समर बखाना।
रावन बध मंदोदरि सोका,
राज बिभीषन देव असोका।

फिर अनेक राक्षसों के समूह का मरण और राम-रावण का युद्ध वर्णन किया। रावण वध, मन्दोदरी का शोक, विभीषण का राजतिलक और देवताओं का दुःख से छूट जाना वर्णन किया।

सीता रघुपति मिलन बहोरी,
सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी।
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता,
अवध चले प्रभु कृपा निकेता।

फिर श्रीसीतारामजी का मिलन कहा। जिस प्रकार देवताओं ने हाथ जोड़कर स्तुति की और तब पुष्पक विमान पर सीता सहित चढ़कर दयासागर प्रभु अयोध्या को चले, वह कहा।

जेहि बिधि राम नगर निज आए,
बायस बिसद चरित सब गाए।
कहेसि बहोरि राम अभिषेका,
पुर बरनत नृपनीति अनेका।

जिस भांति रामचन्द्रजी अपने नगर में आये, वे सब चरित्र कागभुशुण्डिजी ने विस्तार से कहे। फिर श्रीरामजी का राज्याभिषेक कहा। अयोध्यापुरी का वर्णन कर अनेक भांति की राजनीति कही।

कथा समस्त भुसंड बखानी,
जो मैं तुम्ह सन कही भवानी।
सुनि सब राम कथा खगनाहा,
कहत बचन मन परम उछाहा।

हे भवानी! जो कथा मैंने तुमसे कही है वही कागभुशुण्डिजी ने कही। गरुड़जी सारी रामकथा सुनकर मन में बहुत आनन्दित होकर यह बोले—

सोरठा

गयउ मोर संदेह,
सुनेउँ सकल रघुपति चरित ।
भयउ राम पद नेह,
तव प्रसाद बायस तिलक । ६८ क ।

हे कागभुशुण्डिजी! सम्पूर्ण श्रीरामचरित्र मैंने सुना, जिससे मेरा सन्देह जाता रहा। आपकी कृपा से श्रीरामजी के चरणों में मेरा प्रेम हो गया।

— ० —

श्री रामस्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन,
हरण भव भय दारुणम्।
नव कंज लोचन कंज मुख,
कर कंज पद कंजारुणम्।
कन्दर्प अगणित अमित छवि,
नवनील नीरज सुन्दरम्।
पट पीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि,
नौमि जनक सुतावरम्।
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव,
दुष्ट दलन निकन्दनम्।

रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल,
चन्द दशरथ नन्दनम्।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु,
उदार अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर - चाप - धर,
संग्राम - जित खरदूषणम्।
इति वदति तुलसीदास शंकर,
शेष मुनिमन रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु,
कामादि खल दल गंजनम्।
मनु जाहिं राचेउ मिलहिं सो,
वर सहज सुन्दर सांवरो।

करुणानिधान सुजान सीलु,
सनेहु जानत रावरो।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय,
सहित हिय हरषीं अली।
तुलसी भवानिहिं पूजि-पुनि,
मुदित मन मन्दिर चली।

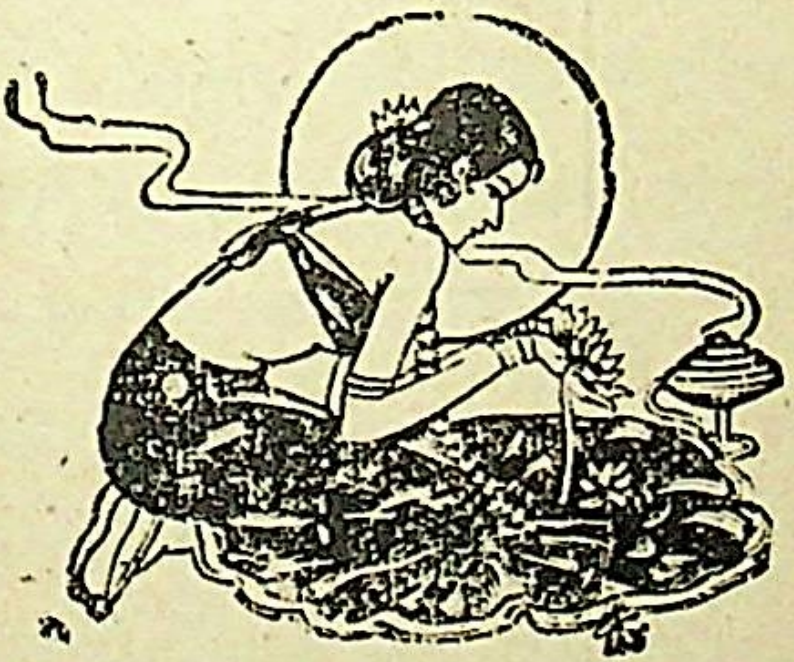

भगवान् श्रीजानकीनाथ

जय जानकीनाथा, जय श्रीरघुनाथा,
दोउ कर जोरें बिनवौं प्रभु! सुनिये बाता।
तुम रघुनाथ हमारे प्रान, पिता-माता,
तुम ही सज्जन-संगी भक्ति-मुक्ति दाता।
लख चौरासी काटो मेट्यो यम-त्रासा,
निसिदिन प्रभु मोहि रखिये अपने ही पासा।
राम भरत लछिमन सँग शत्रुहन भैया,
जगमग ज्योति विराजै, सोभा अति लहिया।
हनुमत नाद बजावत, नेवर झमकाता,
स्वर्णथाल कर आरती कौसल्या माता।
सुभग मुकुट सिर, धनु सर कर सोभा भारी।
मनीराम दर्शन करि पल-पल बलिहारी।

। श्री राम ।

राम-कृपा अवतरण

परम कृपा सुरूप है, परम प्रभु श्री राम।
जन पावन परमात्मा, परम पुरुष सुख धाम।

सुखदा है शुभा कृपा, शक्ति शान्ति स्वरूप।
है ज्ञान आनन्द मयी, राम कृपा अनूप।

परम पुण्य प्रतीक है, परम ईश का नाम।
तारक मंत्र शक्ति घर, बीजाक्षर है राम।

साधक साधन साधिए, समझ सकल शुभ सार।
वाचक वाच्य एक है, निश्चित धार विचार।

मंत्रमय ही मानिए, इष्ट देव भगवान्।
देवालय है राम का, राम शब्द गुण खान।

राम नाम आराधिए, भीतर भर ये भाव।
देव दया अवतरण का, धार चौगुना चाव।

मंत्र धारणा यों कर, विधि से लेकर नाम।
जपिए निश्चय अचल से, शक्ति धाम श्रीराम।

यथा वृक्ष भी बीज से, जल रज ऋतु संयोग।
पाकर, विकसे क्रम से, त्यों मंत्र से योग।

यथा शक्ति परमाणु में, विद्युत् कोष समान।
है मंत्र त्यों शक्तिमय, ऐसा रखिए ध्यान।

ध्रुव धारणा धार यह, राधिए मंत्र निधान।
हरि-कृपा अवतरण का, पूर्ण रखिए ज्ञान।

आता खिड़की द्वार से, पवन तेज का पूर।
है कृपा त्यों आ रही, करती दुर्गुण दूर।

बटन दबाने से यथा, आती बिजली धार।
नाम जाप प्रभाव से, त्यों कृपा अवतार।

खोलते ही जल नल ज्यों, बहता वारि बहाव।
जप से कृपा अवतरित हो, तथा सजग कर भाव।

राम शब्द को ध्याइये, मंत्र तारक मान।
स्वशक्ति सत्ता जग करे, उपरि चक्र को यान।

दशम द्वार से हो तंभी, राम कृपा अवतार।
ज्ञान शक्ति आनन्द सह, साम शक्ति संचार।

देव दया स्वशक्ति का, सहस्त्र कमल में मिलाप।
हो सत्पुरुष संयोग से, सर्व नष्ट हों पाप।

नमस्कार सप्तक

करता हूं मैं वन्दना, नत शिर बारम्बार।
तुझे देव परमात्मन्, मंगल शिव शुभकार।

अंजलि पर मस्तक किये, विनय भक्ति के साथ।
नमस्कार मेरा तुझे, होवे जग के नाथ।

दोनों कर को जोड़ कर, मस्तक घुटने टेक।
तुझ को हो प्रणाम मम, शत शत कोटि अनेक।

पाप-हरण मंगल-करण, चरण शरण का ध्यान।
धार करूँ प्रणाम मैं, तुझको शक्ति-निधान।

भक्ति-भाव शुभ-भावना, मन में भर भरपूर।
श्रद्धा से तुझ को नमूँ, मेरे राम हजूर।

ज्योतिर्मय जगदीश है, तेजोमय अपार।
परम पुरुष पावन परम, तुझको हो नमस्कार।

सत्यज्ञान आनन्द के, परम धाम श्री राम।
पुलकित हो मेरा तुझे, होवे बहु प्रणाम।

प्रातः पाठ

परमात्मा श्री राम परम सत्य, प्रकाश रूप, परम ज्ञानानन्दस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, एकैवाद्वितीय परमेश्वर, परम पुरुष, दयालु देवाधिदेव है, उस को बार-बार नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार।

— ०—

आरती श्रीरामचन्द्र जी की

जगमग जगमग जोत जली है।
राम आरती होन लगी है।।
भक्ति का दीपक प्रेम की बाती।
आरती संत करें दिन राती।।
आनन्द की सरिता उभरी है।
जगमग जगमग जोत जली है।।
कनक सिंहासन सिया समेता।
बैठहिं राम होई चित चेता।।
वाम भाग में जनक लली है।
जगमग जगमग जोत जली है।।
आरती हनुमत के मन भावे।
राम कथा नित शंकर गावे।।
सन्तों की ये भीड़ लगी है।
जगमग जगमग जोत जली है।।

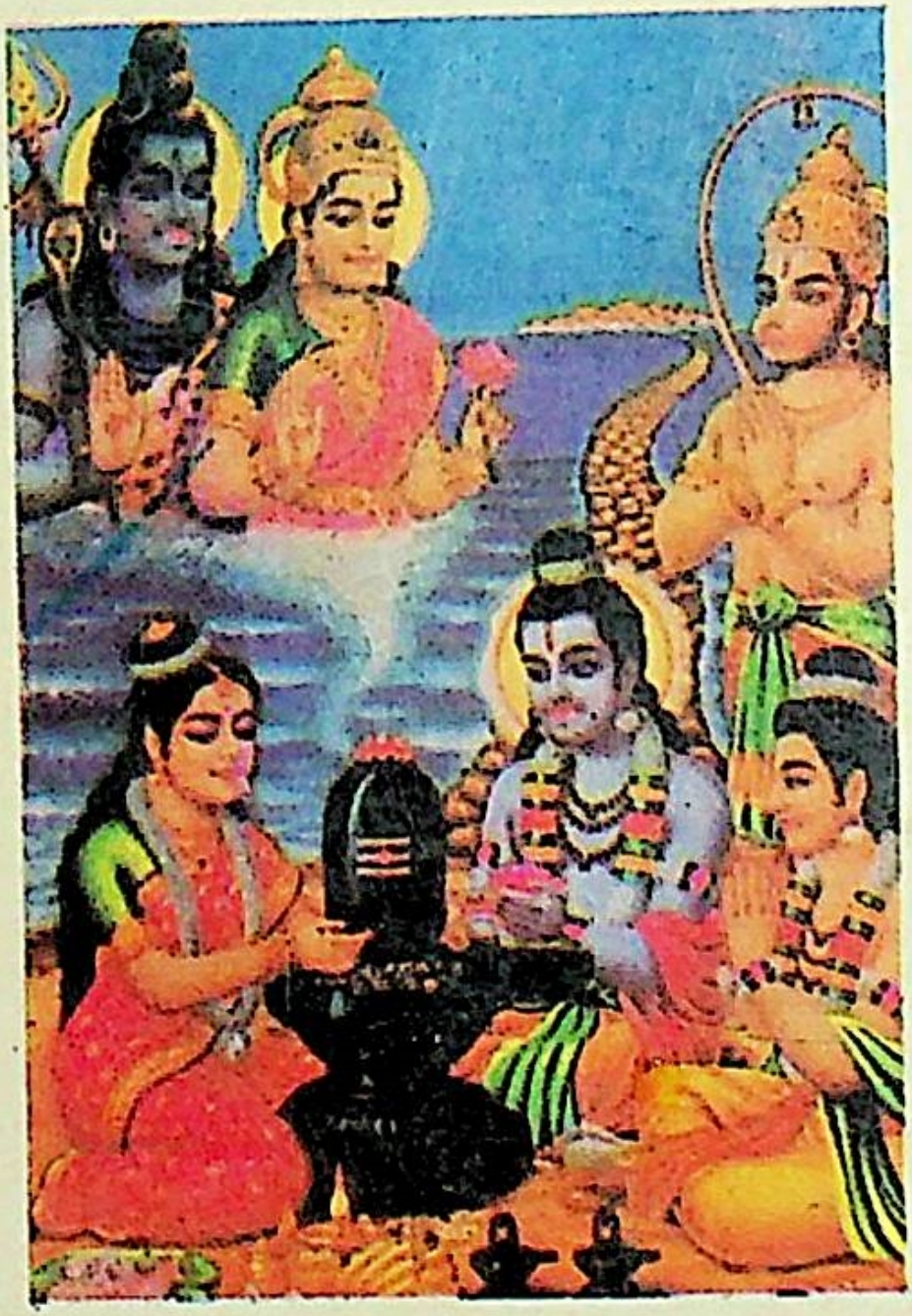

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार